अरुणिमा-दिसंबर २०२०

प्रोग्रेसिव एज्युकेशन सोसायटी का

मॉडर्न कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय

(स्वायत्त), पुणे-४११००५, महाराष्ट्र

हिंदी विभाग

द्वारा प्रकाशित

" अरुणिमा"

(मसिक पत्रिका)

दिसंबर: २०२०

प्रकाशक:
प्रा. शामकांत देशमुख,
डॉ. राजेंद्र झुंजारराव
संपादक: डॉ. प्रेरणा उबाळे
सहायक: अनिसा शेख़

1. कविता : जिसे पिता कहते हैं

संदेश सरनाईक ,
प्रथम वर्ष कला, हिंदी

हर घर में होता है वो इंसान
जिसे हम पिता कहते हैं ।

सभी की खुशियों का ध्यान रखते
हर किसी की इच्छा पूरी करते ।

खुद गरीब और बच्चों को अमीर
बनाते
जिसे हम पिता कहते हैं ।

बड़ों की सेवा भाई-बहनों से लगाव
पत्नी को प्यार, बच्चों को दुलार ।

खोलते सभी ख्वाइशों के द्वार
जिसे हम पापा कहते हैं ।

बेटे की शादी, बेटों को मकान
बहुओं की खुशियाँ, दामादों का मान
।

कुछ ऐसे ही सफर में गुजारे वो हर
शाम,
जिसे हम पिता कहते हैं ।

2. कविता : हिंदी भाषा

शबनम खातुन
द्वितीय वर्ष, एम. ए. हिंदी साहित्य

प्रकृति की पहली ध्वनि 'ओम' है।
मेरी हिंदी भाषा भी इसी 'ओम' की देन है।
देवनागरी लिपि है इसकी, देवों की कलम से उपजी।
बांग्ला, गुजराती, भोजपुरी, डोंगरी, पंजाबी और कई
हिंदी ही है, इन सबकी जननी।
प्रकृति को हर एक चीज
अपने में संपूर्ण है
मेरी हिंदी भाषा भी
अपने में संपूर्ण है।
जो बोलते हैं, वही लिखते हैं
मन के भाव, सही उभरते हैं।
हिंदी भाषा ही तुम्हें
प्रकृति के समीप ले जाएगी।
मन की शुद्धि, तन की शुद्धि
सहायक बन जाएगी।
कुछ हवा चली है, ऐसी यहाँ कहते हैं।
इस मातृभाषा को बदल डाले
क्या बदल सकते हो तुम अपनी माता को।
मातृभाषा में फिर क्यों बदलाव करें
हिंदी की जड़ों पर आओं, हम गर्व करें।
हिंदी भाषा पर आओं, हम गर्व करें।

3. कविता - माँ

रोहिणी चव्हाण
द्वितीय वर्ष,एम. ए. हिंदी साहित्य

माँ....
घुटनों से रेंगते-रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हुआ ,
तेरी ममता की छाँव में
जाने कब बड़ा हुआ ।
काला टीका दुध मलाई,
आज भी सब कुछ वैसा है
मैं ही हूँ हर जगह,
प्यार ये तेरा कैसा?
सीधा-साधा,भोला-भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ ।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा
'माँ' मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ ।